नमामि देवी नर्मदा के दर्शनीय घाट

नर्मदा नदी की विशेषता है की ये पूर्व से पश्चिम दिशा की और बहती है।मध्यप्रदेश की जीवन रेखा है।नदी के तट पर कई प्रसिद्ध धार्मिक नगर ,मंदिर ,महल और किले एवं,कई एक से बढ़कर एक सुन्दर घाट निर्मित है इनके महत्व का पुराणों ,ग्रंथों में उल्लेख मिलता है।इनमे से कुछ डूब क्षेत्र में प्रभावित होने से उन्हें ज्यों का त्यों सुरक्षित जगह बसाया गया है।धार्मिक पर्व पर श्रद्धालु तथा परिक्रमावासी स्नान,पूजन का कार्य करते है।नदियों को प्रदूषण से मुक्त रखने हेतु कई स्थानों पर सामाजिक संस्थाएं कार्य कर रही है।ताकि पानी स्नान ,आचमन योग्य हो सके।ऐसी ही सुचारू व्यवस्था का संकल्प लेना होगा।नर्मदा नदी के तट स्थित रहने वाले कई रहवासी अपने घर के निकले गंदे पानी का निकास घर के पीछे करते है और उस गंदे पानी को सोख्ता गड्ढे में समाहित करते है ताकि सीधे गन्दा पानी माँ नर्मदा के स्वच्छ जल में न मिले ।वर्तमान में ऐसी ही प्रक्रिया को अपनाने की आवश्यकता है ।ताकि सीधे तौर पर गंदा पानी पावन नदी में न मिल पाए।देखा जाए तो नदियों में गंदा पानी नहीं जाना चाहिए किंतु वाटर ट्रीटमेंट व्यवस्था न होने से वर्तमान में कई जगह गन्दा पानी मिलता है।शासन ने नर्मदा शुद्धिकरण अभियान के द्वारा नर्मदा के किनारे बसे सभी शहरों में वाटर ट्रीटमेंट प्लांट स्थापित किये जाने की योजना रखी है । साथ ही नर्मदा को स्वच्छ बनाने के लिए नागरिकों से सहयोग का आव्हान भी किया है ।जिससे माँ नर्मदा के जल को प्रदूषण से मुक्त रखने में हर व्यक्ति अपनी भूमिका सही तरीके से अदा कर सके ।साथ ही नदी के तट में मिटटी का कटाव रोकने हेतु नदी के तट पर फलदार वृक्ष ज्यादा मात्रा में लगाया जाना चाहिए जिससे परिक्रमा वासी,नदी में स्नान करने वाले श्रद्धालुओं जल उपयोगकर्ताओं को गर्मी में सुखद छांव एवं फल की प्राप्ति हो सकें ।जहा तक हो सके डेकोरेटेड पेड़ व् जिसमे फल न लगते हो न लगाए।नदियो को प्रदूषण से मुक्त करने का दायित्व निभाने वाली संस्थाओ को पुरस्कृत कर उन्हें शासन से सहायता मुहैया होना चाहिए ताकि नदियो के शद्धिकरण के द्वारा सभी को शुध्द जल का लाभ मिलकर जल संक्रमण से होने वाली बीमारियो से निजात मिल सके ।साफ -सफाई न होने से भी बीमारिया पनपती है जिसके कारण इंसान आर्थिक और शारीरिक रूप से कमजोर हो जाता है।स्वच्छता न होने से पनपे विभिन्न रोगो से जब पीड़ित होते है तब स्वच्छता की बाते अपने आप ही समझ में आ जाती है। स्वच्छता का संदेश और जागरूकता लाना हर इंसान का कर्तव्य है .क्योंकि स्वच्छता से ही बीमारियो ,प्रदूषण को मुक्त रख कर स्वस्थ्यता का लाभ हमें एक नई दिशा प्रदान कर सकता है . साफ सफाई करने हेतु आपस में सहयोग की भावना को बढावा देकर स्वच्छ नदी एवम प्रदूषण मुक्त नदी बनाने का संकल्प लेना होगा ताकि स्वस्थ गाँव -शहर समाज के निर्माण में अपनी भागीदारी को सुनिश्चित किया जा कर नमामि देवी नर्मदे अभियान के लक्ष्य को पूरा करने में अपनी

भूमिका नदियों की स्वच्छता बनाये रखने में बेहतर तरीके से अदा कर सके ।नर्मदा यात्रा का स्वागत सत्कार करें नर्मदा का विरल प्रवाह और निर्मलता सदैव बनी रहे।इस हेतु हम सबका एक ही उद्देश्य हो की नर्मदा का संरक्षण कर उसे प्रदूषण मुक्त करे।

मनोरम घाट की बात करे तो नर्मदा परिक्रमा पर बहुत से सुंदर घाट और उनका पौराणिक महत्व है। बने हुए है।महेश्वर घाट और भी मनोरम घाट बने हुए है और कई स्थानों पर घाट बनाए जाने की पहल की जा रही है। मध्य प्रदेश की जीवनदायिनी नर्मदा सर्वत्र पूजनीय है।मां रेवा के प्राचीन घाट सरदार सरोवर के बैक वाटर से प्रभावित होने के कारण आने वाले दिनों में धार जिले की कुक्षी तहसील में नर्मदा तट स्थित मेघनाद घाट के बारे में प्राचीन ग्रंथो में उल्लेख है.जब मेघनाद यहाँ से गुजरा तो उसके पास दो शिव लिंग थे . एक शिवलिंग हाथ से छूट कर माँ नर्मदा नदी में जा गिरा .मेघनाथ उसी स्थल पर विश्राम कर तपस्या की . किवदंती है कि नर्मदा नदी के मेघनाथ घाट में स्नान करने से सौ

अश्वमेध का फल प्राप्त होता है।मेघनाद का जन्म रावण के पुत्र के रूप में हुआ था और उसे इंद्रजीत का नाम तब मिला जब उसने इंद्र को हराया और बंदी बना लिया. रामायण में, मेघनाद एक शक्तिशाली योद्धा के रूप में वर्णित है, जो मायावी विद्याओं में निपुण था और राम-रावण युद्ध में एक प्रमुख भूमिका निभाता है. अन्ततः मेघनाद अपनी कठोर तपस्या में सफल हुआ और भगवान शिव ने उसे दर्शन दिए। भगवान शिव ने उसे कई सारे अस्त्र-शस्त्र, शक्तियां और सिद्धियां प्रदान की। परन्तु उन्होंने मेघनाद को सावधान भी कर दिया कि कभी भूल कर भी किसी ऐसे ब्रह्मचारी का दर्शन ना करे जो 12 वर्षों से कठोर ब्रह्मचर्य और तपश्चार्य का पालन कर रहा हो ।कोटेश्वर घाट सरदार सरोवर के बेक वाटर के चलते डूब प्रभावित होने के कारण कुक्षी तहसील के अधिकांश आसपास के गांव के श्रद्धालु मेघनाथ घाट आते है। यह घाट कोटेश्वर के पश्चिम क्षेत्र में स्थित पहाड़ी क्षेत्र नर्मदा तट ग्राम चंदनखेड़ी में है। यह स्थान अति प्राचीन तपोस्थली के रूप में प्रसिद्ध है। जिसका वर्णन नर्मदा पुराण में भी मिलता है। किवदंतियों के अनुसार यहां अतिप्राचीन तपस्थली मेघनाद ने घोर तपस्या की थी। यह प्राचीनतम घाट है।नदी में स्नान से अश्वमेधयज्ञ का फल प्राप्त होता है. इसके नजदीक अवधूतानंद आश्रम है जो मेघनाथ घाट के समीप है . ये आश्रम और सामने बड़े बड़े पहाड़,हरियाली से आच्छादित और तट पर नर्मदा नदी बहती है . इसके आसपास बेक वाटर भी जल स्तर बढ़ने से आ जाता है . इसके लिए वहाँ नाव का सहारा लिया जाता है . नर्मदा नदी के तट जितने भी आश्रम है वे तप,शांति मन को सुकून देने वाले है.आश्रम में रहने वाले सिद्ध महात्माओं के दर्शन और उनके मुखारविंद से सनातन संबंधी उपदेश सुनने और आश्रम की सेवा हेतु अन्य प्रदेशों से श्रद्धालु आते है और एक शांति का अनुभव पाते है। इन दर्शनीय स्थलों पर अवश्य जाना चाहिए. इन घाटों,आश्रम के दर्शन हेतु,तत्कालीन मुख्यमंत्री जी एवं वर्तमान मुख्यमंत्री जी भी आ चुके है.साथ ही घाट को बेहतर बनाए जाने हेतु उनके एवं स्थानीय क्षेत्र के लोगों प्रयत्न जारी है. आसपास के जिलों से श्रद्धालुओं तथा परिक्रमा वासियों का आवागमन बढ़ जाने से यहां पर आयोजित होने वाले सत्संगों द्वारा धार्मिक, सामाजिक समानता के साथ साथ समरसता का भाव जगता है.मध्य प्रदेश में धार जिले के नर्मदा किनारे चंदनखेड़ी मेघनाद घाट अब नदी पर्यटन का प्रमुख केंद्र बनेगा। यहां से गुजरात की स्टैच्यू ऑफ यूनिटी तक क्रूज संचालन केवड़िया तक 120 किमी में प्रदेश का पहला अंतप्रांतीय जलमार्ग शीघ्र बन कर तैयार हो रहा है।अवधूत आश्रम के मनोरम दृश्य वाकई मन मोह ले कर अंतरात्मा से पुनीत भाव जगाते है.और शब्द निकलते है 'नमंदे हर '।

संजय वर्मा 'दृष्टि '
125 ,बलिदानी भगत सिंह मार्ग
मनावर जिला धार मप्र

बढ़ते चांदी सोने के दाम के कारण महिलाओं में गोटा चांदी आर्टिफिशियल ज्वेलरी की बढ़ी मांग दुकानों पर भीड़

पलसूद ।(इंदौर समाचार) चांदी के दाम पहली बार तीन लाख रुपये प्रति किलो के पार पहुंचने के बाद आम उपभोक्ताओं की पहुंच से बाहर होती जा रही है। ऐसे में महिलाओं के बीच जर्मन व्हाइट मेटल, आर्टिफिशियल ज्वेलरी जिसे स्थानीय भाषा में गोटा चांदी एवं बेनटेक्स कहा जाता है, जिसकी मांग तेज़ी से बढ़ रही है। किफायती कीमत, आकर्षक ऑक्सीडाइज्ड लुक और टिकाऊपन के कारण यह ज्वेलरी अब चांदी सोने की तुलना में लोकप्रिय विकल्प बनती जा रही है।

जर्मन सिल्वर में असली चांदी नहीं होती, बल्कि यह निकल, कॉपर और जिंक के मिश्रण से तैयार की जाती है। यही कारण है कि यह चांदी जैसी चमक देती है, लेकिन कीमत काफी कम रहती है। बढ़ती महंगाई के दौर में उपभोक्ता इसी कारण इसे अधिक पसंद कर रहे हैं।

मांग बढ़ने के प्रमुख कारण

बढ़ती चांदी की कीमतें- असली चांदी महंगी होने से लोग उसके विकल्प के रूप में जर्मन सिल्वर को अपना रहे हैं।

किफायती और टिकाऊ- कम कीमत में आकर्षक डिज़ाइन और लंबी उम्र इसकी सबसे बड़ी खासियत है।

संवेदनशील त्वचा के लिए उपयुक्त- कई महिलाओं के लिए यह त्वचा के अनुकूल मानी जाती है।

पलसूद बाजार में गोटा चांदी की ज्वेलरी पारंपरिक पसंद , गोंड, भील, आदिवासी ,जनजातियों की पसंद भारी हार, सिक्को की माला , पायल, बाजूबंद, तागली, कड़ी, कंदोरा, हाथफूल सहित अन्य आभूषणों की मार्केटजा डिजाइनों में उपलब्ध है जिसकी खूब बिक्री हो रही है। स्थानीय कुशल कारीगर इन्हें पीढ़ियों से हाथ से तैयार करते आ रहे हैं, जिससे इनकी कारीगरी में खास निखार देखने को मिलता है।

त्योहारों और आयोजनों में खास पसंद

यह ज्वेलरी पार्टी वियर के साथ-साथ पारंपरिक अवसरों पर भी खूब पसंद की जा रही है। भगोरिया जैसे आदिवासी त्योहार, विवाह समारोह, विश्व आदिवासी दिवस और रोज़मर्रा के उपयोग में भी इसका चलन तेजी से बढ़ रहा है।

पारंपरिक आदिवासी आभूषण अपने विशिष्ट स्वरूप, सांस्कृतिक जुड़ाव और बाजार में बढ़ते चांदी के भाव के कारण एक नया चलन बन गए हैं!

व्यापारियों का कहना है कि आने वाले समय में यदि चांदी सोने के दाम इसी तरह ऊंचे बने रहे, तो जर्मन व्हाइट मेटल, आर्टिफिशियल ज्वेलरी की मांग और अधिक बढ़ने की पूरी संभावना है।

अंतिम पत्र

देश बदल रहा है !

समाचार- महाराष्ट्र मे नव निर्वाचित पार्षदो की रिसोर्ट मे बाड़ेबंदी। टिप्पणी- वाह ! अब महाराष्ट्र के नव निर्वाचित पार्षदो को भी विधायक जैसा महसूस हो रहा होगा। अभी तक तो विधायको की रिसोर्ट मे बाड़ेबंदी होती थी, अब पार्षदो की भी। वाकई मे देश बदल रहा है।

आशीष सकलेचा, जावरा

क्या आलीराजपुर एक पाँचजन्य संस्कृति युक्त-क्षेत्र

आलीराजपुर।

शहर जिस प्रकार आली, राजपुर शब्द मिलकर पूर्ण आलीराजपुर जिला क्षेत्र बना ;निर्मित हुआद्ध। उसी श्रृंखला का दुजा स्वरूप हे यहाँ की सांस्कृतिक सभ्यता का। वैसे तो आलीराजपुर क्षेत्र प्रारंभी काल से ही एक विचित्र शैली की रही है। जो पूर्व में विश्व पटल पर काफी कुख्यात मानी जाती थी। परन्तु परिवर्तन समय के वेग ने उस कॉल को समय की धारा के साथ वर्तमान में काफी परिवर्तित कर दिया है। प्रायरू तौर पर आलीराजपुर श्री मंत शाही दौर से ही आदिम युग का प्रेरणा पुंज क्षेत्र का सिरमोर क्षेत्र रहा है। जहाँ की माटी में आज भी उस वन भूमि से वनवासी तत्व अर्थात आदिवासी गणों की बहुलता से ओतप्रोत क्षेत्र रहा है। यहाँ की सांस्कृतिक आबो.हवा एवं जन.जीवन आदिम संस्कृति के कारण विश्व प्रसिद्ध रही है। आदिवासी बहुलता के इस क्षेत्र की संस्कृति में सर्वाधिक प्रतिशत बहुमत हे तो वह है स्थानिय स्तर पर आदिवासी का। जिस कारण से ही क्षेत्र आदिवासी बहुल बना। उसी संदर्भ में स्थानिय संस्कृति और रिंति.रिवाजों के साथ.साथ भाषा पर्व और रहन.सहन भी विभिन्न शैलियों में परिवर्तित है। यदि हम यहाँ बात

करें कि क्षेत्र की तुलना पाँडजंय शब्दों में क्यों की जा रही हेघ् तो तब उदाहरण स्वरूप में मानिये की आलीराजपुर क्षेत्र ;जिलेद्धकी बसाहट की दशा और दिशा को स्वीकारिये की आलीराजपुर की पृष्ठभूमि कैसी है।

तब समझिये कि प्राकृतिक रूप से उक्त क्षेत्र की बसाहट ही कुछ विचित्रतापूर्वक रही है। जो वर्तमान काल में एक विस्मयता का घोतक ;रहस्य मयताद्ध बनी हुई है। आलीराजपुर क्षेत्र वर्तमान में पाँच संस्कृतियों से लिप्त है। जैसे आलीराजपुर क्षेत्र के समिप ही गुजरात.निमाड़ और मालवा के साथ महाराष्ट्र की भाषा.संस्कृति का मेल.मिलाप के साथ स्थानिय भाषा.संस्कृति में आदिवासी भाषा.संस्कृति का मिश्रण क्षेत्र को एक प्रकार से पाँडजंय क्षेत्र भी बना सकती है। आलीराजपुर क्षेत्र विभिन्न संस्कृति युक्त क्षेत्र होने के कारण उसे हम आज पाँडजंय क्षेत्र के नाम से भी पुकार (संबोधनकरद्ध सकते हैं। आलीराजपुर क्षेत्र की मौसम प्राकृतिक सौदय एवं शालिन व मिलनसार सभ्यता यहाँ की विशेष पहचान बनी हुई है। यही एक स्थानिय प्रमुख मुद्दा रहा है जो वर्तमान में भी बेमिशाल रहा है और वह स्थानिय जन मानस में आपसी प्रेम और भाई.चारा जो अन्य क्षेत्रों में भी एक ज्वलंत आधार उदाहरण ;मिशाल बना हुआ है। आज भी आलीराजपुर का इतिहास रहा है कि स्थानिय स्तर पर कभी भी जाति सांप्रदाईक दंगे नही छिड़े । तथा आज भी आलीराजपुर क्षेत्र अपनी उसी विशेषता को संजो कर अपनी स्मिता बनाये रखा हुआ है। जो आस.पास के क्षेत्रों में एक विभिन्न उदाहरण संयोग का पात्र बना हुआ है। तब हुई ना आलीराजपुर की गणना का पाँडजंय शब्दों में खरी.खरी प् आलीराजपुर की इस अलोकिक छटा की विभिन्न शैलीयों की निर्मलता.शांत आबो.हवा प्रदुषण मुक्त जीवन यहाँ की खास पहचान बनी हुई है। शायद इसी एक मात्र कारण से समिपवर्ती शहरों में आलीराजपुर की गणना विशिष्ट स्वरूप से की जाती है। वैसे तो आलीराजपुर क्षेत्र के प्रसिद्धी के और भी अनेक कारण ;मामलेद्ध हो सकते है। परन्तु यहाँ पर आलीराजपुर को पाँडजंय शब्द से पुकारा जाना शायद किसी प्रकार कि कोई अतिशियोक्ती नही होगी। हालाकि पाँडजंय शब्द महाभारत काल से विशेष वर्णित हैं क्योंकि इसी नाम से एक शंख भी हुआ था जिसका उपयोग भगवान श्रीकृष्णजी ने महाभारत युद्ध कॉल में अपने हस्तो से प्रयुक्त कर संदेश दिया था।

दिनेशचन्द्र मनोहरलाल
विश्वकर्मा
आलीराजुपर

गिरफ्तार कर निकाला जुलूस, फिर पुलिस के पास लेकर पहुंचे

विजय शाह के खिलाफ कॉग्रेंस ने किया अनूठा विरोध प्रदर्शन

भोपाल(ई)। कर्नल सोफिया कुरैशी को लेकर की गई टिप्पणी को लेकर मध्य प्रदेश के जनजातीय कार्य मंत्री विजय शाह की मुश्किलें और बढ़ गई है। मामले में सुप्रीम कोर्ट द्वारा हाल में की गई टिप्पणी के बाद कांग्रेस ने एक बार फिर सड़क पर आकर विजय शाह के खिलाफ मोर्चा खोल दिया है।

कार्यकर्ता को शाह का मुखौठा पहनाकर हथकड़ी लगाई

कांग्रेस कार्यकर्ताओ ने राजधानी भोपाल में अनूठा प्रदर्शन किया। यहाँ कांग्रेस के प्रदेश महासचिव अमित शर्मा के नेतृत्व में एक कार्यकर्ता को मंत्री विजय शाह का मुखौटा पहनाकर उसे हथकड़ी लगाकर पीसीसी के सामने विरोध प्रदर्शन करते हुए जमकर नारेबाजी की गई। इसके बाद कांग्रेस कार्यकर्ता पीसीसी से मंत्री का मुखौटा पहने हुए अपने कार्यकर्ता को किसी गिरफ्तार किये गये आरोपी की तरह हथकड़ी पहनाए हुए उसका जुलूस निकालते हुए पांच नंबर स्टॉप पर स्थित पुलिस चौकी पहुंचे। यहां मंत्री का मुखौटा पहने व्यक्ति को पुलिस के हवाले किया। इस दौरान कांग्रेस के प्रदेश महासचिव अमित शर्मा ने मीडिया से चर्चा के दौरान कहा की मंत्री विजय शाह ने देश की बेटी सोफिया कुरैशी का अपमान किया। सोफिया ने देश का मान-सम्मान बढ़ाया और उसे अपमानित करने वाले मंत्री को मध्य प्रदेश की मोहन सरकार बचाने में लगी हुई है। छह महीनों से सरकार लगातार मंत्री को संरक्षण दे रही है। शर्मा ने आगे कहा की मध्य प्रदेश की सरकार जिस मंत्री का संरक्षण कर रही थी, उसपर मुकदमा चलाने का आदेश सुप्रीम कोर्ट ने दिया है। सुप्रीम कोर्ट की टिप्पणी से सत्य की जीत हुई है मोहन सरकार की हार हुई है। कार्यकर्ता को विजय शाह का मुखौटा लगाकर हथकड़ी पहनाकर जुलूस निकालने की बात पर अमित शर्मा ने कहा की हम मंत्री विजय शाह के घर गए थे, वे घर से फरार हैं। हमें विजय शाह केरवा के जंगल में घूमते हुए मिले हमने उन्हें प्रतीकात्मक रूप से गिरफ्तार करके पुलिस के हवाले किया है।साथ ही कांग्रेस नेताओ ने चेतावनी दी है कि यदि विजय शाह को मंत्री पद से नहीं हटाया जाता है, तो कांग्रेस सीएम मोहन यादव का घर घेरेंगे।

देश चाँद पर, हम नेटवर्क के लिए पहाड़ पर

धोरट गांव के ग्रामीणों ने कलेक्टर के नाम तहसीलदार को सौंपा ज्ञापन

सोंडवा – ग्राम धोरट में मोबाइल नेटवर्क की बदहाली और राशन वितरण में आ रही दिक्कतों को लेकर आज ग्रामीणों का गुस्सा फूट पड़ा। मंगलवार को जागरूक युवा और ग्रामवासियों ने जिला कलेक्टर के नाम तहसीलदार को गांव में बुलाकर ज्ञापन सौंपा।

1. राशन वितरण में बाधा- नेटवर्क न होने के कारण धोरट की उचित मूल्य की दुकान (सोसाइटी) पर पॉस मशीन (Biometric) काम नहीं करती है। इसके कारण गरीब ग्रामीणों और बुजुर्गों को हफ़्तों तक राशन के लिए भटकना पड़ता है। यह सीधे तौर पर हमारे खाद्य सुरक्षा के अधिकार का उल्लंघन है।

2. शिक्षा एवं आपातकालीन सेवा- गाँव के छात्र ऑनलाइन पढ़ाई और प्रतियोगी परीक्षाओं के फॉर्म भरने से वंचित हैं। साथ ही, बीमारी या दुर्घटना की स्थिति में एम्बुलेंस (108) को फोन लगाना भी असंभव हो जाता है, जिससे ग्रामीणों की जान का खतरा बना रहता है।

3. तकनीकी विडंबना- अत्यंत खेद का विषय है कि जहाँ एक ओर हमारा देश चाँद पर नेटवर्क पहुँचा

रहा है, वहीं दूसरी ओर धोरट के नागरिक एक सामान्य कॉल करने के लिए पहाड़ों और ऊँची छतों पर चढ़ने को मजबूर हैं।

4. टावर कर्मचारियों की लापरवाही एवं भ्रष्टाचार- गाँव में स्थित छ्वद्भश टावर के कर्मचारियों द्वारा टावर हेतु आने वाले डीजल की खुलेआम चोरी की जा रही है। बिजली कटते ही जनरेटर चलाना अनिवार्य है, लेकिन डीजल बेच दिए जाने के कारण जनरेटर नहीं चलाया जाता और टावर पूरी तरह बंद हो जाता है। ऐसे भ्रष्ट कर्मचारियों पर सख्त कानूनी कार्यवाही की जाए।

युवाओं का कहना है की संबंधित टेलीकॉम कंपनियों को तत्काल प्रभाव से नया टावर लगाने या नेटवर्क क्षमता बढ़ाने हेतु आदेशित करें।जब तक नेटवर्क की समस्या स्थायी रूप से ठीक नहीं होती, तब तक राशन वितरण के लिए वैकल्पिक %ऑफलाइन% व्यवस्था सुनिश्चित करवाएं।

ग्रामीण का मानना है की प्रशासन जनहित में हमारी इस बुनियादी माँग को गंभीरता से लेकर शीघ्र निराकरण करे।अन्यथा हम समस्त ग्रामवासी आने वाले दिनों में कलेक्ट्रेड कार्यालय पहुंचकर उग्र आंदोलन हेतु विवश होंगे।

इस अवसर पर झमराला सरपंच,प्रकाश सस्तिया,निलेश सस्तिया,तगन सेल्टिया,विकाश सस्तिया,मनकर,गुमान पटेल,सुमेश,जम्बू,रसिक,सिराज,राके श,जितेंद्र,गुंडिया,सहित बड़ी संख्या में ग्रामीण मौजूद थे।।

बसंत पंचमी पर्व को लेकर

निसरपुर के मुख्य मार्गों से निकला फ्लैग मार्च

निसरपुर- कुक्षी थाना अंतर्गत चौकी निसरपुर में सोमवार को आगामी त्यौहारों बसंत पंचमी को मध्य नजर निसरपुर नगर के प्रमुख मार्गों से फ्लैग मार्च निकाला।

यहां नगर के प्रमुख चौराहा गणेश चौपाटी दशहरा मैदान सदर बाजार मस्जिद मोहल्ला होते हुए संवेदनशील वार्डो से यह फ्लैग मार्च गुजरा जिसमें स्थानीय पुलिस बल के साथ सी आर पी एफ आर ए एफ सहित 107 के द्वितीय कमान अधिकारी मनीष महाले के साथ कमांडेड के कई अधिकारी भी मौजूद थे फ्लैग मार्च का उद्देश्य स्पष्ट करते हुए बताया कि इसका लक्ष्य जनता में सुरक्षा व्यवस्था के प्रति विश्वास पैदा करना और त्योहारों को शांतिपूर्ण ढंग संपन्न करना है उनका अनुभव हमेशा अच्छा रहा है और यहां के लोग आपसी सद्भाव के साथ त्यौहार मनाते आए हैं जिसके चलते आम जनता से अपील है कि किसी भी अपवाह से बचे ओर शांति बनाए रखें अपने त्योहारों को हर्षोल्लाह के साथ मनाए और असामाजिक तत्वों से भी अनुरोध है कि किसी भी प्रकार से माहौल बिगड़ने की कोशिश ना करे प्रशासन की चप्पे चप्पे पर पैनी नजर है इस फ्लैग मार्च में कुक्षी एसडीएम विशाल धाकड़ तहसीलदार प्रवीण पाटीदार एसडीओपी सुनील गुप्ता थाना प्रभारी राजेश यादव चौकी प्रभारी रवि वास्के एएसआई भुवानसिंह चौहान एएसआई शंकर तोमर एएसआई थानसिंग जमरा सहित निसरपुर चौकी बल मौजूद रहा।

तेंदुए की अफवाहों से शहर में दहशत, वन विभाग ने जारी की एडवाइजरी

थांदला, मनोज उपाध्याय। क्षेत्र में पिछले कुछ दिनों से तेंदुए की गतिविधियों की खबरों ने आम जनजीवन में डर का माहौल पैदा कर दिया है। विशेष रूप से सोशल मीडिया पर नगरीय क्षेत्र के आसपास तेंदुए की मौजूदगी की अफवाहें तेजी से वायरल होने के बाद नागरिकों में असुरक्षा की भावना बढ़ गई है। हालांकि, वन विभाग ने इन चर्चाओं पर स्थिति स्पष्ट करते हुए नगरीय क्षेत्र में तेंदुए की उपस्थिति से साफ इनकार किया है और इसे महज एक अफवाह बताया है। इसके बावजूद, विभाग ने सुरक्षा की दृष्टि से लोगों के लिए एक महत्वपूर्ण एडवाइजरी जारी की है ताकि किसी भी अनहोनी से बचा जा सके। गौरतलब है कि पिछले पंद्रह दिनों के भीतर ब्लॉक के ग्रामीण इलाकों में तेंदुए की सक्रियता के प्रमाण मिले हैं, जिससे स्थिति गंभीर बनी हुई है। ग्राम मोरझरी में तेंदुए के हमले में पांच लोग घायल हो चुके हैं, जबकि ग्राम पलासडोर के तलावड़ी फलिए में दो बैलों को भी तेंदुए ने अपना शिकार बनाने की कोशिश की। इन घटनाओं के बाद ग्राम महुड़ीपाड़ा और आसपास के क्षेत्रों में तेंदुए की आवाजाही की चर्चाएं आम हो गई। मामले की गंभीरता को देखते हुए वन परिक्षेत्राधिकारी तोलाराम हटीला ने वीडियो संदेश और आधिकारिक पत्र के माध्यम से जनता से सतर्क रहने की अपील की है। उन्होंने ग्रामीणों और शहरवासियों को रात्रि के समय अतिरिक्त सावधानी बरतने और बच्चों को रात में अकेले बाहर न भेजने की हिदायत दी है। वन विभाग ने त्वरित सूचना के लिए दो मोबाइल नंबर भी सार्वजनिक किए हैं ताकि वन्यजीव की किसी भी संदिग्ध हलचल की जानकारी तुरंत विभाग तक पहुंच सके।